महत्वपूर्ण एवं खास

भुजबंधान तालाब के पास स्थित राममंदिर के गुंबद में फांसी पर लटकी मिली पुजारी की लाश

क्षेत्र में फैली सनसनी, कोतवाली पुलिस मामले की जांच में जूटी

रायगढ़। बैकुंठपुर क्षेत्र के भुजबंधान तालाब के पास स्थित निर्माणाधीन राममंदिर के गुंबद में पुजारी ने संदिग्ध परिस्थिति में धोती से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। इस घटना के बाद बैकुंठपुर इलाके में सनसनी फैल गई है। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार मृतक पुजारी का नाम अनिल दीक्षित है वे मुलतः मध्यप्रदेश के भिंड जिले के गेरवासा का रहने वाला था। जो रायगढ़ में ही रहकर पिछले कई वर्षों से पूजा पाठ कर अपना जीवन यापन कर रहा था। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंच गई थी। और पंचनाम कर शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। वहीं मामले की जांच में जूट गई है।

राज्योत्सव पर मुख्य शासकीय भवनों पर रोशनी किए जाने के निर्देश

रायगढ़। राज्य शासन ने निर्णय लिया है कि राज्य में आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू होने के कारण इस वर्ष जिले में राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव' आयोजित नहीं किया जाएगा। केवल 01 नवंबर 2018 की रात्रि में सभी जिला मुख्यालयों एवं राजधानी रायपुर, अटल नगर रायपुर में स्थित शासकीय भवनों पर रोशनी की जाएगी।

नगर सैनिकों को डाकमत पत्र के संबंध में दिया गया प्रशिक्षण

रायगढ़। जिला नगर सेनानी में कार्यरत सैनिक को आज पुलिस ग्राउण्ड चांदमारी स्थित बैरक में डाकमत पत्र के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया जिसमें सैनिकों से प्रपत्र 12 भरवाया गया तथा मास्टर ट्रेनर्स के द्वारा डाकमत पत्र के माध्यम से मतदान कैसे किया जाना है, इस संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला सेनानी कमांडेड बी.कुजूर, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी डी.के.वर्मा, शास.उच्च.माध्य. विद्यालय धनागर के प्राचार्य राजेन्द्र मेहर, मास्टर ट्रेनर भुनेश्वर पटेल एवं बड़ी संख्या में नगर सैनिक उपस्थित थे। इसी तरह धरमजयगढ़ विधानसभा में पुलिस विभाग के प्रमुख अर्जुन कुर्रे एवं श्रीमती सरोजनी टोप्पो और पुलिस विभाग के कर्मचारियों को डाकमत पत्र प्रारूप 12 भरवाया गया। इस अवसर पर मास्टर ट्रेनर रविशंकर सारथी, हाकिम उल्ला खान, के. विश्वास के द्वारा ईव्हीएम एवं व्हीव्हीपीएटी मशीन के बारे में प्रशिक्षण दिया गया।

मर चुकी है बाल कल्याण समिति और लैलूंगा पुलिस की संवेदनायें

दुष्कर्म के दो मामलों में पुलिस की कार्यवाही लचर, गैंग रेप पीड़िता और घटना का संदर्भ

पत्रकार नितिन सिन्हा की कलम से....

रायगढ़। जहां एक और केंद्र एवं राज्य सरकार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ नारे को बुलन्द करने में लगे हैं तो दूसरी तरफ रायगढ़ जिले में बेटियाँ की सुरक्षा को लेकर जिम्मेदार विभागो की गम्भीर लापरवाहियां सामने आ रही है। दूसरी तरफ ऐसे हालात तब और अधिक तकलीफ तब देते हैं, जब जिले की प्रशासनिक कमान एक उच्च-शिक्षित संवेदनशील महिला के हाथो में है। वहीं जिला प्रशासन सहित पुलिस विभाग में भी तमाम बड़े पदों पर महिला अधिकारियों की भरमार है। फिर भी दुष्कर्म और सामूहिक दुष्कर्म के मामलों में पीड़िता बालिग/नाबालिग बेटियों को न्याय पाने के लिए या तो काफी संघर्ष करना पड़ता है या अपमानजनक परिस्थितियों में आरोपियों से समझौते की कवायद लिखी जाती है। उत्तरांचल में स्थिति लैलूंगा थाना क्षेत्र में घटी कुछ घटनाएं ऐसे दुःखद हालात को बयान करती है।

पहली घटना के अनुसार लैलूंगा थाना क्षेत्र के अंतर्गत घटी इस घटना में जिसमें बताया जा रहा है कि, युवती से दुष्कर्म का मुख्य आरोपी 15 दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस गिरफ्त से बाहर है। लैलूंगा विकासखंड के बिरसिंघा जंगल में थाने से महज 8 किलोमीटर की दूरी पर वीरसिंह घाट जंगल में दोपहर 2:00 बजे के आसपास, दिनदहाड़े दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया गया जिसमे आपराधिक मनोवृत्ति का आरोपी मौका पाकर गांव में चावल पिसा कर आ रही बिरसिंघा की एक युवती को जबरदस्ती जंगल में ले जाकर न केवल उससे दुष्कर्म किया, बल्कि विरोध करने पर पीड़िता का पैर भी तोड़ दिया था। दुष्कर्म की इस घटना को घटे करीब 15 दिन बीत चुके हैं इसके बाद भी घटना का आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर है। दिनदहाड़े घटी इस घटना के बाद से ही आसपास के इलाकों में सनसनी फैल गई। खासकर इस रास्ते से स्कूल जाने वाली छात्राओं मे डर का माहौल है । इस मामले में अभी तक पुलिस के हाथों कोई सुराग न लग पाना यहां की कानून व्यवस्था पर सवालिया निशान खड़ा करती है। साथ ही ग्रामीण अंचलों में घटना के बाद पुलिस के खिलाफ रोष व्याप्त है। बिरसिंघा जंगल में ही हुए दिनदहाड़े दुष्कर्म मामले में पीड़िता के परिजनों का कहना है कि कुछ दिन पहले जमीन संबंधी विवाद को लेकर गांव के ही 10 -15 लोगों ने घर घुसकर मारपीट की कोशिश की थी। जिसकी पूर्व में ही लैलूंगा पुलिस थाने में नामजद शिकायत की गई थी । उसके बाद भी किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं की गई उक्त विवाद होने के कुछ दिन बाद ही उसी घर के पीड़िता के साथ दुष्कर्म होना कहीं ना कहीं आपसी रंजिश को जन्म देता सा दिखाई पड़ता है। इस पूरे मामले में दहशत में जी रहे पीड़िता और उसके परिजनों ने पुलिस पर ही लापरवाही का आरोप लगाते हुए, समय पर कार्यवाही नहीं किये जाने की बात कही। लैलूंगा पुलिस के इस रवैये को लेकर असन्तुष्ट परिजन घटना की शिकायत लेकर जल्दी ही एस.पी. सहित आई.जी. के पास जाने की मंशा बना चुके बताए गए है।

पीड़िता का क्या कहना है?

घटना को लेकर पीड़िता का कहना है,कि घर के लिए चावल पिसा के आते समय एक अज्ञात युवक ने उसका पीछा किया, और सुनसान रास्ते में मुझे जबरदस्ती खींच कर जंगल की तरफ ले गया और मेरे साथ बालात् दुष्कर्म किया। घटना के बाद हमारे द्वारा शिकायत लैलूंगा थाने में की गई थी। परन्तु घटना के 15 दिन बीत जाने के बाद भी अभी तक आरोपी पुलिस गिरफ्त से बाहर है।

दूसरी घटना, शरद पूर्णिमा के दिन इसी थाने के अंतर्गत राजपुर मेला देखने आई नाबालिक लड़की के साथ गैंगरेप की दिल दहला देने वाली शर्मनाक घटना घटी जिसके बाद पीड़िता को कथित तौर पर घटना में संलिप्त एक रसूखदार आरोपी, जो कि कोई फूड इंस्पेक्टर बताया जा रहा है, के समक्ष घण्टों बैठाकर उससे समझौते के लिए या तो मजबूर किया गया या ऐसा माहौल बनाया गया जिससे पीड़िता भ्रमित होकर उसे पहचान नही पाए। हालांकि घटना की जानकारी मिलते ही लैलूंगा थाने में कथित आरोपी फूड इंस्पेक्टर को छोड़कर 5 लोगों के नाम पर अपराध दर्ज किया गया जिसमें से तीन संलिप्त लोगों की तत्काल गिरफ्तारी की गई, जबकि दो आरोपी फरार हो गए, वहीं घटना में प्रयुक्त कार भी जप्त की गई है ऐसा बताया जा रहा है।

क्या थी घटना ?

घटना के बारे में विस्तार से मिली जानकारी यह है, कि मेला देखने आई 16 साल की नाबालिक युवती के साथ घटना के दिन 24 अक्टूबर की रात राजपुर मेला देखने अपने रिश्तेदारों के साथ आई हुई थी। पीड़िता तमनार के ग्राम भालुमुंडा की रहने वाली थी।

घटना के दिन वह ग्राम फुलिकुण्डा से राजपुर मेला देखने आई हुई थी जहां मेला देख रही युवती को कुछ युवकों ने बालात् मेला स्थल से उठाकर कार में बैठाते हुए जंगल की तरफ ले गए। जहां पीड़िता नाबालिग से क्रूरता के साथ कामांध युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया, वही विरोध किये जाने पर युवती के साथ बुरी तरह मारपीट भी की गई। घटना को अंजाम देने के बाद युवती को बुरी तरह डराया धमकाया भी गया कि अगर वह किसी को इस घटना के बारे बताएगी तो उसे जान से मार दिया जाएगा।

घटना की जानकारी उसके परिजनों को मिलने के बाद पुलिस थाना लैलूंगा में इसकी शिकायत की गई। जिसके आधार पर लैलूंगा पुलिस ने कथित फूड इंस्पेक्टर को छोड़कर शेष आरोपियों के विरुद्ध धारा 323, 363, 366, 376-डी, 506, के तहत अपराध पंजीबद्ध कर लिया गया लेकिन लैंगिक अपराध से बालकों का संरक्षण अधिनियम 2012 के सम्बंध में किसी अपराध के पंजीबद्ध किए जाने सम्बंधी कोई जानकारी अभी तक नही मिली है।

जिसके बाद लड़की के बताए अनुसार 3 युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया और घटना में संलिप्त दो युवक फरार हो गए। पुलिस जिनकी पतासाजी में लग गई। जबकि पीड़िता और उसके परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार उपरोक्त घटना में लैलूंगा में पदस्थ खाद्य निरीक्षक मनोज कुमार सारथी को पुलिस ने बचाने का काम किया। पीड़िता के परिजन कहते दिखे की इस रसूखदार आरोपी के पक्ष में पुलिस एवं स्थानीय पार्टी के नेताओं ने पुलिस थाने में ही उन्हें घण्टों बैठाकर समझा बुझाकर उपरोक्त फूड-इंस्पेक्टर को बचाने का काम किया। आरोपी फूड इंस्पेक्टर को बचाने में कुछ प्रभावशाली मीडिया कर्मियों ने भी भूमिका निभाई। वही लैलूंगा पुलिस की कार्यशैली को लेकर पीड़िता के परिजनों सहित स्थानीय लोग भी बेहद नाराज हैं। उनके अनुसार पुलिस पीड़िता की स्थिति जानते हुए भी उसको दो दिनों तक यहां वहां किया,मीडिया में खबर चलने के बाद उसे रायगढ़ जिला मुख्यालय के सिटी हॉस्पिटल में मुलाहिजा के लिए ले जाया गया। जबकि यह जानते हुए भी की नाबालिग पीड़िता को घटना की जानकारी मिलने के तुरंत बाद ही जिले की बाल कल्याण समिति के समक्ष 24 घण्टों के भीतर अनिवार्य रूप से पेश करना होता है।

क्या कहती हैं जस्सी फिलिप

बाल कल्याण समिति की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती जस्सी फिलिप का कहना है, कि किसी भी नाबालिग पीड़िता के सम्बंध में, ऐसी घटना की जानकारी किसी भी माध्यम से मिलते ही सीडबल्यूसी को स्वतः संज्ञान लेते हुए,पुलिस कार्यवाही की प्रतीक्षा के बिना ही पुलिस के उच्चाधिकारियों के सहयोग से पीड़िता को रेस्क्यू कर हर हाल में सुरक्षित माहौल में लाना होता है जहां उसकी मनोदशा को समझते हुए उसके काउंसलिंग की व्यवस्था की जाती है। फिर भयमुक्त माहौल में पीड़िता का बयान दर्ज किए जाने के बाद अग्रिम कार्रवाही की जाती है।

क्या कहती है एस. तामस्कर

घटना के सम्बंध में रायगढ़ बाल कल्याण समिति से बातचीत करने पर समिति की सम्मानीय सदृश्या तामस्कर मैडम ने बताया कि लैलूंगा पुलिस ने अब तक पीड़िता को समिति के समक्ष पेश नही किया है। तो ऐसे हालत में हम क्या कर सकते हैं। बाकी आप बता रहे है, तो मैं व्यक्तिगत रूप से देखती हूं।

ब्यूरो की तरफ से, हमने कई बार घटना के सम्बंध में वर्तमान कालिक जानकारी लेने के लिहाज से थाना प्रभारी लैलूंगा से उनके सार्वजनिक नम्बर पर सम्पर्क करना चाहा, परन्तु फोन रिसीव नही हुआ। समाचार लिखे जाने तक घटना में संलिप्त एक और फरार आरोपी के पकड़े जाने की अपुष्ट जानकारी मिली है। जबकि पीड़िता उसके निज निवास में बुरी मनोदशा के साथ न्याय पाने की अपेक्षा में दिन गुजार रही है, और सभी आरोपियों को सज़ा दिलवाए जाने के पक्ष में है।

चुनाव बहिष्कार करने अभ्यारणवासी हुये सक्रिय

विस्थापन करे या जमीन की खरीदी बिक्री के पंजीयन से रोक हटाने की मांग

न्याय साक्षी - नरेश चौहान ब्यूरो रिपोर्ट सारंगढ़

रायगढ़/सारंगढ़। सारंगढ़ विधानसभा के लिए राजनैतिक दलों के प्रत्याशी घोषित होने के साथ ही अब गोमर्डा अभ्यारण के 28 गांव के किसान एवं ग्रामीण चुनाव बहिष्कार करने सक्रिय हो गये हैं जिसकी मंगलवार 29 अक्टूबर को बैठक कर सभी गांव में चुनाव बहिष्कार का पोस्टर लगाने हेतु बांटा। बैठक में निर्णय लिया गया कि, किसी भी पार्टी के चुनाव प्रचार वाहन को प्रवेश नही देगें, और साथ ही मतदान के दिन वोट नहीं देकर बहिष्कार करेंगे। मिली जानकारी के अनुसार अभ्यारण के लोग 18 साल से जमीन खरीदी बिक्री के पंजीयन पर रोक एवं गरीब वर्ग के लोगों के जीविका से जुड़े सरकारी योजना का लाभ नही मिलने से नाराज हैं और विधानसभा चुनाव बहिष्कार करने की चेतावनी प्रशासन को दी है। ग्रामीणों ने प्रशासन से विस्थापित करने या फिर जमीन की खरीदी बिक्री का पंजीयन करने की सीधी मांग रखी है। वहीं सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इसका जवाब प्रशासन तलाश रहा है इसके लिए वन विभाग सीसीएफ सहित अन्य अधकारियों को बताया जाकर जवाब मंगाया है। लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान अथवा विकल्प नही मिला है, जिससे अभ्यारणवासी संतुष्ट हो। वहीं प्रशासन के बेरूखी से

नाराज अभ्यारण के लोगों ने समस्या के समाधान नही होने तक विधानसभा के बाद लोकसभा चुनाव का भी बहिष्कार करने का भी मन बना लिया है। जिससे इन 28 गांव में मतदान होने की गुंजाईश कम हो गई है, अभ्यारण के लोगों ने सभी गांव में चुनाव बहिष्कार की सूचना बोर्ड टांग दिया है। इस सम्बंध में, कि राजनैतिक दलों के प्रचार प्रसार न करने का संदेश पोस्टर लगाकर आज से बैठकें भी ली जा रही हैं, इसमें अभ्यारण क्षेत्र के सरपंच भी अपना समर्थन दे रहे है।

क्या थम जायेगी प्रचार वाहनों की पहिये

गोमर्डा अभ्यारण के लोगों ने राजनैतिक दलों के प्रचार प्रसार में लगी वाहनों को कोर क्षेत्र में प्रवेश करने नही देंगे इससे भाजपा, कांग्रेस, बसपा सहित अन्य दलों का गोमर्डा अभ्यारण के गांवों में नही जा पाएंगे। इसके साथ ही मतदान से पहले ग्रामीणों को नही मनाया गया तो वोट भी नही होगा ऐसी सूचना आई है। इस क्षेत्र के सभी पार्टी के कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रूप से ग्रामीणों द्वारा चेताया गया है कि कोई भी अपने पार्टी का प्रचार प्रसार एवं लोगों को किसी भी प्रकार से अपने पक्ष में करने का प्रयास न करें, यदि कोई भी ऐसा करता है या आंदोलन कमजोर करते है, तो उस पार्टी के खिलाफ अभ्यारण के सभी लोग हो जाएंगे। हालांकि कार्यकर्ताओं को थोड़ी राहत देते हुए अभ्यारण के बाहर अन्य गांव में प्रचार प्रसार से बंदिश विचार विमर्श के बाद शिथिल कर दिया है।

वहीं बैठक में ग्रामीणों ने किसी भी मतदान दल के प्रवेश को बाधित न करने के साथ ही गलत व्यवहार न करने का स्पष्ट मत बैठक में रख कर पूरे अहिंसात्मक किसान आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाने की योजना

तैयार की है। वहीं इन 28 गांव में लगभग 5 हजार मतदाता हैं जिनके चुनाव बहिष्कार से राजनैतिक समीकरण भी बिगड़ने वाला है, जिसका सीधा नुकसान राजनैतिक दलों को होगा, इसके लिए ग्रामीणों ने सभी दलों के जिलाअध्यक्ष को पत्र भेजकर किसान आन्दोलन में साथ देकर चुनाव प्रचार प्रसार न करने अपील करने वाले है। अब देखना है कि निर्वाचन आयोग और जिला प्रशासन ग्रामीणों को चुनाव बहिष्कार करने से रोक पाएगा या समस्या का समाधान करने हेतु कोई ठोस पहल करेगा, यह आने वाला समय ही बतायेगा।

क्या अबकी बार के जनप्रतिनिधि दिला पाएंगे सारंगढ़ को जिले का दर्जा ?

क्या सारंगढ़ लोकसभा को पुनः अस्तित्व में लाए बिना नहीं होगा क्षेत्र का विकास ?

न्याय साक्षी - नरेश चौहान ब्यूरो रिपोर्ट सारंगढ़

रायगढ़/सारंगढ़। परिसीमन के बाद सारंगढ़ विधान सभा क्षेत्र रायगढ़ लोकसभा में शामिल हो गया है किंतु सारंगढ़ अंचल की ग्रामीण जनता आज भी परिसीमन के प्रभाव से अनजान सारंगढ़ लोकसभा सीट से कांग्रेस और भाजपा के प्रत्याशी के बारे में एक दुसरे से जानकारी लेते हैं । वास्तविकता की जानकारी होने पर उपेक्षा की पीड़ा अंचल के निवासियों में फांस बन कर कसक बना रही है। अविभाजित मध्यप्रदेश में आजादी के बाद से ही सारंगढ़ अंचल के राजपरिवार का सत्ता की राजनीति में खासा दखल रहा है। गिरिविलास पैलेस के स्वर्गीय राजा नरेशचंद्र सिंह जी 24 वर्षो तक मध्यप्रदेश के शासन में मंत्री पद में रहे। वे13 दिनों के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भी थे, वहीं उनकी पुत्री कु रजनीगंधा एक बार विधायक बनी, कु कमला देवी भी सत्ता में थी, ऐसी राजनितिक प्रभुत्ता के बाद भी सारंगढ़ विकास से कोसों दूर है। बताया जाता है कि, सन् 1972 में सारंगढ़ जिला निर्माण की दौड़ में आगे था, जब राजनांदगांव और भोपाल को जिले का दर्जा मिला। 1977 में जब सारंगढ़ लोकसभा बना, तब भी लोगों ने सोचा था की सारंगढ़ का अब

विकास होगा पर आज भी सारंगढ़ अपने विकास के लिए तरसता सा दिखता है। छत्तीसगढ़ बनने के बाद लोगों ने सोचा की शायद अब सारंगढ़ में विकास की गंगा बहेगी पर ऐसा नहीं हो पाया।

आम जनता का कहना है 1977 से सारंगढ़ के लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं की ये क्षेत्र जिला बनेगा, पर आज 2018 में भी एक कसक है, मायूसी हैं। लेकिन, हमारे जनप्रतिनिधयों ने कभी जनता की आवाज को इतना बुलंद नहीं किया कि सारंगढ़ जिला बने। अब तक सारंगढ़ रेल लाईन का निर्माण शुरू नही हो पाया। 100 बिस्तरों वाले हॉस्पिटल की मांग आज भी एक सपना बनकर रह गया है, जो कब हकीकत का रूप लेगा नही मालूम। और भी हैं जन सरोकार के मुद्दे जैसे उच्चशिक्षा हेतु छात्रों की भटकन, प्राचीन मंदिरों की दुर्दशा, आदि। पर्यटन स्थलों को प्रदेश एवं देश के नक्शे में स्थान दिलाना भी एक सपना है। ऐसे स्थिति में विधानसभा चुनाव काफी दिलचस्प रहेगा कि कौन सा जन-प्रतिनिधि इन सब मुद्दों के लिए गंभीर है?